# चरैवेति–चरैवेति

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**

**पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

भारतीय संस्कृति का मूलपरक सूत्र है– चरैवेति–चरैवेति। चरैवेति का अर्थ है चलते रहो, चले रहो, प्रयत्न करते रहो। जल यदि एक स्थान पर स्थित रहता है तो उसमें बदबू आने लगती है परन्तु यदि जल बहता रहता है तो उसमें शुद्धता, निर्मलता और सुन्दरता बनी रहती है। प्रकृति हमें यह शिक्षा देती है कि सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए। एक चींटी दिवाल पर बार–बार चढती है और गिरती है किन्तु वह हार नहीं मानती। वह बराबर प्रयास करती रहती है और दिवाल पर चढ़कर अपने मंजिल को प्राप्त कर लेती है। प्रयत्न करने से मनुष्य को पीछे नहीं हठना चाहिए। मुख्य रूप से यह सूत्र विद्यार्थियों पर अधिक लागू होता है। विद्यार्थी को अपने मंजिल को प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि और पक्का इरादा रखना चाहिए। असफलता से कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। असफलता को जीतने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति हार मानकरके रुक जाता है उसका भाग्य भी वही रुक जाता है। भाग्य के भरोसे बैठकर कभी भी रुकना नहीं चाहिए। संसार में जितने भी महापुरुष हुये है उन्होंने चरैवेति–चरैवेति का सूत्र अपने जीवन में लागू किया। इसी का परिणाम है कि वे महान् कहलाये। प्रोफेसर (डॉ.) सोहनराज तातेड़ ने भारत रत्न प्राप्त कर्त्ताओं का जीवनवृत एक पुस्तक में प्रस्तुत किया है। भारत रत्न प्राप्त कर्त्ताओं का जीवनवृत पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि महानता जन्म से नहीं प्राप्त होती बल्कि अर्जित की जाती है। ऐसे महापुरुषों का जीवन चरित्र समाज के लिए प्रेरणास्रोत है। जितने भी महान् लोग हुए है बचपन में उन्हें घोर कष्ट का सामना करना पड़ा है लेकिन उन्होंने कष्टों के सामने हार नहीं मानी बल्कि कष्टों पर विजय प्राप्त की और भारत रत्न को प्राप्त किया। भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी का जीवन भी इस संबंध में अवलोकनीय है। जीवन के प्रारंभिक समय में उन्हें कैसी–कैसी आपदाओं का सामना करना पड़ा यह भारतीय लोगों से छिपी नहीं है। वह स्वयं भी बहुत बड़े कर्मयोगी है। एक छोटे से गरीब परिवार में उत्पन्न होकर भारत जैसे देश के प्रधानमंत्री पद को अलंकृत किया है यह उनकी चरैवेति–चरैवेति का सबसे बड़ा उदाहरण है। उनके द्वारा जीवन क्षेत्र में किया

गया पुरुषार्थ उनके मार्ग को प्रशस्त किया है। उन्होंने कठिनाईयों को कभी अपने ऊपर भारी नहीं होने दिया बल्कि कठिनाईयों को जीतकर उस पर विजय प्राप्त की। जीवन में आगे बढ़ने के लिए पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समयबद्ध प्रयास होना जरूरी है। समय–समय पर कार्य की समीक्षा भी करते रहना चाहिए। आज का युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य ने अभूतपूर्व उन्नति की है। परन्तु बहुत कम ही लोग ऐसे होते है जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती है अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते है। हममे से अधिकांश लोग जिने मनवांछित वस्तुएं प्राप्त नहीं होती है वे स्वयं की कमियों को देखने की बजाय भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते है। भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते है जो अपने पुरुषार्थ के द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति पर आस्था रखते है, वही व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होता है। पुरुषार्थी अथवा कर्म पर विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं और समस्याओं को सहजता से स्वीकार कर उसका निवारण करने का प्रयास करता है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। जीवन संघर्ष में वह निरंतर अग्रसित होता है। कुछ लोग ऐसे होते है जो भाग्य भरोसे बैठे रहते है। ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी सफलता अथवा खुशी मिलने पर अत्यन्त प्रसन्न हो जाते है और थोड़ी सी कठिनाई आने पर विचलित हो जाते है। ऐसे व्यक्तियों से सफलता बड़ी दूर रहती है। ऐसे व्यक्ति स्वयं की कमियों को खोजने तथा उनको ढूंढ़ने के बजाय अपने भाग्य को दोष देते है। महात्मा गांधी ने अपने सत्य और अहिंसा के बल पर अपने पुरुषार्थ से अंग्रेजी दास्ता से मुक्ति दिलायी। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि कर्म का मार्ग पुरुषार्थ का मार्ग है। धैर्यपूर्वक अपने पथ पर अडिग रहना चाहिए। पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करता है। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज अथवा देश को गौरवान्वित करता है। हम नित्य प्रति कुछ न कुछ क्रिया करते है और उसका परिणाम भी हमें मिलता है। एक विद्यार्थी परीक्षा में कठिन परीश्रम करता है तो वह अवश्य उत्तीर्ण होगा। परन्तु वही विद्यार्थी भाग्य के भरोसे बैठे रहकर परीश्रम करना बंद कर दे तो उसका उत्तीर्ण होना असंभव है। यहां पर हम देखते है कि एक ही विद्यार्थी उत्तीर्ण भी हो सकता है और अनुत्तीर्ण भी। इसका केवल यही कारण है कि विद्यार्थी जैसा चाहे वैसा ही

होगा। ईश्वर ने मनुष्य को कोई भी व्यर्थ की वस्तु नहीं दी है। किसी न किसी रूप में प्रत्येक वस्तु का उपयोग मनुष्य द्वारा होता ही रहता है। ईश्वर ने मनुष्य को बुद्धि इसलिए दी है कि वह अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य का स्वयं निर्माण करें। आधुनिक युग वैश्वीकरण का युग है। वैश्वीकरण के युग में चरैवेति–चरैवेति का सूत्र पूरी तरह लागू हो रहा है। विकास के दौड़ में जो पीछे रह गया वह पीछे ही होता चला जायेगा। आवश्यकता इस बात की है कि विश्व के विकसित देशों के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जाये। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व और साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए चरैवेति–चरैवेति का सूत्र जीवन में अपनाना जरूरी है। चरैवेति–चरैवेति का सूत्र विश्वबंधुत्व के लिए आवश्यक है।